International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 11, Issue 01, Jan 2024
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

पर्यावरणीय नियोजन और जीवन की गुणवत्ता पर पर्यावरण प्रदुषण के प्रभावों की समीक्षा

डॉ. भोमाराम

सहायक आचार्य (भूगोल विभाग)

राजकीय महाविद्यालय, टहला (अलवर), राजस्थान

समबद्ध : राज ऋषि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय, अलवर(राजस्थान)

लेख सार :

पर्यावरणीय प्रबन्धन मानव और पर्यावरण के बीच सम्बन्धों को सुधारने की प्रक्रिया हैं। जिसका उद्देश्य मानवीय क्रियाकलापों का नियमन करना है कि ताकि पर्यावरण के तत्वों की नैसर्गिक गुणवत्ता बनी रहे। मानव सभ्यता की प्रगति तथा प्रत्येक मनुष्य के लिए संतोष जनक जीवन स्तर पर्यावरण के अंधा–धुंध शोषण पर अधिक दिन तक नहीं टिक सकता। वस्तुतः प्राकृतिक संसाधन पूँजी के समान है जिसका सुनियोजित ढंग से समुचित लाभ के कार्यों में विनियोग होना चाहिए। संरक्षण संसाधन का अनुत्पादक संचय नहीं वरन् सतत् उत्पान के लिए विवके पूर्ण उपयोग है। प्रदूषण से तात्पर्य मानव के द्वारा किये गये अवांछित कार्यों से पर्यावरण की गुणवत्ता के ह्रास से है जिसमें प्रकृति मानव के लिए विभिन्न प्रकार के विपरीत स्वभाव प्रकट करती है। पर्यावरण अवनयन एवं प्रदूषण के विभिन्न तत्वों में संसाधनों का अतिरिक्त दोहन, अत्यधिक उपयोग, औद्योगिकरण, शहरीकरण आदि कारकों के कारण होता है।

लेख शब्द : पर्यावरण, नियोजन, गुणवत्ता, प्रदुषण,प्रबन्धन, सन्तुलन, पारिस्थितिक स्थिरता, संरक्षण।

पर्यावरणीय नियोजन

पर्यावरणीय नियोजन का इस प्रकार तात्पर्य होता है कि विकासीय कार्यों के लिए पृथ्वी के नव्य तथा अनव्य संसाधनों का विभिन्न रूपों में उपयोग करना दुर्लभ एवं बहुमूल्य संसाधनों का संरक्षण तथा स्वस्थ जीवन के लिए पर्याववरण की गुणवत्ता का परिक्षण करना।नियोजन विकास की प्रकिया होती है। सामान्यतया प्रकृति पर्यावरणीय सन्तुलन तथा कृषि विकास स्थिरता को कायम रखने के लिए स्वतः प्रयत्नशील रहती है परन्तु आधुनिक औद्योगिक समाज ने भारी औद्योगिकरण, प्रौद्योगिकीय क्रान्ति परिवहन एवं संचार के साधनों में तीव्र गति से वृद्धि, प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुन्ध लोलुपतापूर्ण दोहन भूमि उपयोग में भारी वृहत स्तरीय परिवर्तन औधोगिक प्रतिष्ठानों एवं नगरीय क्षेत्रों के अनियमित एवं अनियोजित विस्तार के द्वारा पर्यावरणीय संतुलन तथा कृषि विकास स्थिरता को विक्षुब्ध तथा अव्यवस्थित कर दिया है। दूसरे

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

शब्दों में आर्थिक एवं प्रौधोगिकीय मनुष्य के क्रियाकलापों ने पर्यावरण एवं मानव के बीच मधुर सम्बन्धों को विशाक्त कर दिया है।

इस प्रकार पर्यावरण प्रबन्धन मनुष्य के साथ यथोचित समायोजन से सम्बन्धित है। जिसके अन्तर्गत पर्यावरणीय सन्तुलन तथा पर्यावरणीय स्थिरता को अव्यवस्थित किये बिना प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण दोहन एवं उपयोग किया जाना चाहिए । ज्ञातव्य है कि चूँकि सामाजिक आर्थिक दृष्टि से समाज का विकास एवं संवर्द्धन आवश्यक है अतः प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन एव उपयोग करना भी जरूरी हो जाता है। यह भी स्भाविक है कि जब प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन किया जायेगा तो कुछ पर्यावरणीय समस्याये अवश्य उत्पन्न होगी क्योंकि प्राकृतिक पर्यावरण के कतिपय संघटकों में बिना किसी क्षति के प्राकृतिक संसाधनों का सार्थक विदोहन तथा सामाजिक आर्थिक विकास सम्भव नहीं है।

पर्यावरणीय नियोजन एवं प्रबन्धन

पर्यावरणीय नियोजन एवं प्रबन्धन इस प्रकार पर्यावरणीय संतुलन तथा पारिस्थितिक स्थिरता और मनुष्य की आर्थिक व भौतिक प्रगति के बीच एक तरह का समझोता हैं। अतः इसके अर्न्तगत पर्यावरणीय द्धिान्तों एवं समाज की आवश्यकाओं पर भरपूर ध्यान देना चाहिए। इस तरह पर्यावरण प्रबन्धन के अन्तर्गत एक तरफ तो समाज के सामाजिक आर्थिक विकास पर ध्यान दिया जाता है तो दुसरी और पर्यावरण की गुणवत्ता के परिक्षण एवं संरक्षण के लिए भरपूर प्रयास किया जाता है। ज्ञातव्य है कि पर्यावरण की गुणवत्ता को परिभाषित करना भी कठीन कार्य है। क्योंकि यह एक व्यक्तिनिष्ट शब्दावली है। समाज के विभिन्न वर्गो के लोग इसका विभिन्न अर्थ लगाते हैं।

पर्यावरण प्रबन्धन के अन्तर्गत निम्न को सम्मिलित किया जाता है–

1. प्राकृतिक संसाधनों के अन्धाधुध एवं लोलुपतापूर्ण विदोहन तथा मनुष्य के अविवेक पूर्ण क्रिया–कलापों पर रोक एवं नियन्त्रण द्वारा पर्यावरण की रक्षा करना प्रदुषण स्तर पर एवं उसे कम करना मानव जनसंख्या की तीव्र वृद्धि पर नियन्त्रण तथा हानिकारक प्रौधोगिक पर रोक लगाना।
2. पर्यावरण एवं उसके संसाधनों के आर्थिक महत्त्व को बढ़ाना ।
3. एवं भावी पीढ़ी के लिए पर्यावरण का परिक्षण करना ।

संसाधनों का संरक्षण तथा प्रदुषण का नियन्त्रण पर्यावरण नियोजन की आवश्यकपूर्ण दशाऐं है। संरक्षण का अर्थ विकासीय कार्यो का स्तगन नहीं होता है वरन् उपयुक्त प्रौधोगिकी के उपयोग के द्वारा सुलभ संसाधनों के मूल्यों को बढ़ाना ताकि वृद्धि एवं विकास की प्रकिया को तेज करना होता है। वास्तव में संरक्षण तथा विकास एक ही सिक्के के दो पहलु है और इस तरह ये एक दुसरे के पूरक होते हैं। वास्तविक अर्थ में कोई वृद्धि तब तक नहीं प्राप्त की जा सकती जब तक समुचित प्रौद्योगिकी द्वारा संसाधन के छोटे से छोटे अंश से अधिकतम प्राप्ति न हो जाये, प्राकृतिक संसाधनों का अपव्यय तथा अल्पता न होने

पर तथा संसाधनों के पुर्नचक्रण के उपाय नहीं कर लिए जाये ताकि पर्यावरणीय तन्त्र पर न्यूनतम भार पड़ सके ।

पर्यावरणीय नियोजन एवं प्रबन्धन का परिक्षणात्मक उपागम मनुष्य के प्रकृति के साथ छेड़–छाड़ न करने पर तथा प्राकृतिक पर्यावरण के साथ पूर्ण समायोजन पर जोर देता है। वास्तव में यह उपागम व्यवहार्य नहीं हैं क्योंकि यदि प्राकृतिक पर्यावरण के साथ छेड़–छाड़ न की जायेगी तो मानव समाज भूखा रह जायेगा तथा विकास के सारे दरवाजे बन्द हो जायेगें। यदि मनुष्य को जिन्दा रखना है तो उसे प्रकृति से कुछ न कुछ तो लेना पड़ेगा।

पर्यावरणीय नियोजन के संरक्षणात्मक उपगम के अन्तर्गत प्रौद्योगिक के सन्दर्भ में भौतिक जैविक पर्यावरण के साथ समायोजन तथा व्यवहारिक संस्थागत समायोजन पर अधिक जोर दिया जाता है। अर्थात मानव समाज के सामाजिक, आर्थिक विकास के लिए प्राकृतिक संसाधनों का विदोहन तथा उपयोग अपव्य होना चाहिए परन्तु जहाँ तक सम्भव हो सके पर्यावरण की गुणवत्ता पर्यावरणीय संतुलन तथा पारिस्थितिकी स्थिरता को बनाये रखने के लिए भरपूर प्रयास किया जाना चाहिए। इस कार्य हेतु समुचित प्रदुषण मुक्त प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाना चाहिए तथा प्राकृतिक पारिस्थितिकी तन्त्र में किसी प्रकार की अव्यवस्था के लिए सम्बन्धित समाज को उत्तरदायि माना जाना चाहिए।

मानव जीवन की गुणवत्ता की अवधारणा :

जीवन की गुणवत्ता मानव और समाज की सामान्य भलाई है जो मानव जीवन को सकारात्मक व नकारात्मक विशेषताओं को दर्शाती है जिसमें मानव को जीवन जीने में संतुष्टी मिलती हो, जैसे– मानव स्वास्थ्य, परिवार, शिक्षा, रोजगार, धन, धार्मिक विश्वास, वित्त व पर्यावरण आदि। मानव जीवन में महत्वपूर्ण एवं एक विस्तृत श्रृंखला है, जिसका निर्माण मानव स्वयं करता है। मानव विकास स्वास्थ्य सेवा, रोजगार आदि पर निर्भर रहता है। मानव जीवन के स्वास्थ्य पर हाल ही में कई तरह के परिवर्तन देखने को मिलते हैं। जीवन की गुणवत्ता में यह परिवर्तन किस तरह हानि पहुँचा रहे हैं, इसका हमें मूल्यांकन करना अति आवश्यक हो गया है। जीवन की गुणवत्ता की अवधारणा के साथ भ्रमित न होकर मानव को अपनी आय पर निर्भर होना चाहिए। मनुष्य की अधिकांश आर्थिक आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए यह आवश्यक है कि दैनिक जीवन में उपभोग की जाने वाली विभिन्न वस्तुओं की मानव जीवन को किस प्रकार आवश्यकता होती है। यह सब मानव की आय पर निर्भर करता है। वरना मानव जीवन की गुणवत्ता में ह्रास हो सकता है। जीवन का स्तर उन्हीं आवश्यकताओं की पूर्ति का द्योतक होता है जो मनुष्य अपनी आय के अनुसार प्राप्त करता है। यह आवश्यकताऐं जलवायु, सामाजिक स्तर, सांस्कृतिक स्तर तथा सांस्कृतिक परम्पराओं के अनुसार भिन्न–भिन्न स्थानों पर बदलती रहती हैं।

जीवन की गुणवत्ता और पर्यावरण प्रदुषण

भौगोलिक अध्ययन एवं शोध का स्वरूप निरंतर परिवर्तित होता रहा है जिसके फलस्वरूप अनेक नवीन विषयों का समावेश इसके अन्तर्गत किया जा रहा है। इन्हीं विषयों के अन्तर्गत विशेषकर वे विषय महत्वपूर्ण हैं जिनका सम्बन्ध मानव के कल्याण से अथवा मानवीय समस्याओं से हैं। इसी क्रम में नगरीयकरण प्रदूषण एवं उसका मानव जीवन की गुणवत्ता पर प्रभाव एक अति नवीन विषय है जिस पर विश्व के अनेक भूगोलवेत्ताओं ने कार्य किया है। जीवन की गुणवत्ता ;फनंसपजल वि स्पमिद्धका सीधा सम्बन्ध पर्यावरण से है क्योंकि पर्यावरण के तत्व न केवल जीवन की गुणवत्ता को नियंत्रित करते हैं अपितु उसे निर्धारित भी करते हैं। पर्यावरण के अन्तर्गत विभिन्न जैविक एवं अजैविक घटकों को सम्मिलित किया जाता है जो कि एक दूसरे से अन्तर्सम्बन्धित होते हैं जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

विभिन्न विद्धानों ने पर्यावरण को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है – वेबस्टर शब्दकोष के अनुसार ''पर्यावरण से आशय उन घेरे रहने वाली परिस्थितियों प्रभावों एवं शक्तियों से है जो सामाजिक एवं सांस्कृतिक दशाओं के समूह द्वारा व्यक्ति और समुदाय के जीवन को प्रभावित करती हैं।

प्रोफेसर सविन्द्र सिंह के अनुसार, ''प्रदूषण उसे कहते हैं जब मनुष्य के इच्छित कार्यों द्वारा प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र में इतना अधिक अंतर हो जाता है कि वह पास्थितिकी तंत्र की सहन शक्ति से अधिक हो जाता है। परिणामस्वरूप पर्यावरण की गुणवत्ता में आवश्यकता से अधिक ह्रास होने से मानव समाज पर दूरगामी हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं।''

प्रदूषण से तात्पर्य मानव के द्वारा किये गये अवांछित कार्यों से पर्यावरण की गुणवत्ता के ह्रास से है जिसमें प्रकृति मानव के लिए विभिन्न प्रकार के विपरीत स्वभाव प्रकट करती है। पर्यावरण अवनयन एवं प्रदूषण के विभिन्न तत्वों में संसाधनों का अतिरिक्त दोहन, अत्यधिक उपयोग, औद्योगिकरण, शहरीकरण आदि कारकों के कारण होता है। असंतुलित औद्योगिकरण, अनियंत्रित नगरीयकरण एवं बढ़ती जनसंख्या प्रभावित करती है। इसके कारण पर्यावरण पर अनावश्यक भार की स्थिति उत्पन्न होती है जो कि प्रदूषण का द्योतक है। इसके कारण जीवन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। क्योंकि प्रदूषण के कारण विभिन्न प्रकार की सुविधाओं का ह्रास होता है एवं संसाधनों के अत्यधिक प्रयोग से ही प्रदूषण की स्थिति पैदा होती है। इस अतिभार की स्थिति के कारण प्रति व्यक्ति संसाधनों का उपभोग अधिक होता है जिसके कारण पर्यावरण प्रदूषण की स्थिति उत्पन्न होती है।

पर्यावरण प्रदूषण के साथ ही आवास, रहन–सहन, सांस्कृतिक, भौतिक, आर्थिक दशाऐं भी प्रभावित होती हैं जो कि मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित करती हैं। विभन्न नगरों में भिन्न–भिन्न क्रिया–कलापों से यह स्थिति उत्पन्न होती हैं। जिनमें निम्न प्रमुख हैं –

1. औद्योगिकरण से उत्पन्न समस्याऐं, 2. बढ़ती जनसंख्या से उत्पन्न समस्याऐं, 3. नगरीकरण के अतिभार से उत्पन्न समस्याऐं, 4. ऊर्जा संकट से उत्पन्न समस्याऐं, 5. तकनीकी प्रयोग से उत्पन्न समस्याऐं, 6. वाहनों के अत्यधिक प्रयोग से उत्पन्न समस्याऐं, 7. घरेलू अपशिष्टों से उत्पन्न समस्याऐं,8. विभिन्न सार्वजनिक एवं सामाजिक कार्यक्रमों से उत्पन्न समस्याऐं।

उपरोक्त सभी कारकों के कारण विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्याऐं उत्पन्न होती हैं। शहरों में लगातार औद्योगिकरण की होड़ लगी हुई है जिसके कारण संसाधनों का अत्यधिक विदोहन हो रहा है जिससे प्राकृतिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो रही है। इसी प्रकार नगरीकरण के कारण कृषि भूमि संकुचित होती जा रही है एवं नदियाँ छोटी होती जा रही है। साथ ही विभिन्न प्रकार के अवसाद एवं अपशिष्टों के कारण पर्यावरण अवनयन की दशा उत्पन्न हो रही है। पर्यावरण प्रदूषण में वाहनों का अत्यधिक प्रयोग, कृषि भूमि में रसायनों का प्रयोग, घरेलू अपशिष्ट, बढ़ती जनसंख्या आदि के कारण भी प्राकृतिक संकट की दशा उत्पन्न हो रही है। इस प्रकार कई ऐसे कारक हैं जो पर्यावरण की गुणवत्ता को कम करते जा रहे हैं।

मानव जैव जगत का एक महत्वपूर्ण तत्व है, जिसे प्रकृति ने अन्य जीवों से अधिक बुद्धिमत्ता व कार्य क्षमताऐं प्रदान की हैं, जिसकी सहायता से वह अन्य संसाधनों को अपने उपयोग के निमित्त कार्य में लेता है। प्रकृति प्रदत्त इन संसाधनों का सुनियोजित उपयोग होने पर जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि होती है व मानव जीवन खुशहाल व समृद्ध होता है, लेकिन जब अधिक आर्थिक लाभ तथा स्वार्थ के वशीभूत मानव के द्वारा प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का अन्धाधुन्ध विदोहन करने व उपभोग की प्रवृत्ति में वृद्धि होने के फलस्वरूप पर्यावरण में विकार उत्पन्न होने लगते हैं तो कई नवीन समस्याओं का उदय होता है। इसके साथ–साथ मानव जीवन की गुणवत्ता में भी कमी आती है। प्रस्तुत शोध अध्ययन झुंझुनूं शहर के सम्बन्ध में इन सभी तथ्यों को स्पष्ट करने का एक तुच्छ प्रयास है, जिसमें पर्यावरण में विकार उत्पन्न होने पर बाधित मानव जीवन गुणवत्ता का युक्ति युक्त विश्लेषण इस शोध कार्य में किया जाना अपेक्षित है।

वर्तमान में प्रत्येक विषय की भाँति भौगोलिक अध्ययन एवं शोध का स्वरूप भी निरंतर परिवर्तित हो रहा है, जिसके फलस्वरूप अनेक नवीन विषयों का समावेश इसके अन्तर्गत लगातार हो रहा है। इन्हीं विषयों के अन्तर्गत विशेषकर वे विषय महत्वपूर्ण हैं, जिनका सम्बन्ध मानव जीवन से हैं। प्रकृति द्वारा निर्मित सृष्टि में मानव का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रकृति ने जिसे अन्य जीवों की अपेक्षा अधिक कार्यकुशल, बुद्धिमत्ता युक्त व क्षमतायुक्त बनाया है तथा इन क्षमताओं व कार्यकुशलताओं के प्रयोग द्वारा प्रकृति के अन्य संसाधनों को मानव ने अपने लिए उपयोगी बनाया है और अपने जीवन निर्वाह के साधन सुनिश्चित किये हैं। वर्तमान समय में मनुष्य ने नवीनतम आधुनिक तकनीकों का प्रयोग करना सीखा है तथा उनकी सहायता से मानव ने जीवन की गुणवत्ता में वृद्धि की है। मानव जीवन की गुणवत्ता से अभिप्राय व्यक्ति को प्राप्त होने वाली सुविधाओं की मात्रा से है, जिससे उसका जीवन खुशहाल व समृद्ध बनता है। इन साधनों में शिक्षा,

चिकित्सा, पेयजल, आवास, जनभागीदारी, जीवन की आकांक्षा, आर्थिक सुरक्षा, स्वच्छता आदि को लिया जाता है।

वर्तमान समय में बढ़ती अधिक आर्थिक समृद्धि की लालसा व उपभोग की प्रवृत्ति के फलस्वरूप प्रकृति के एक और महत्वपूर्ण तत्व पर्यावरण में विकार उत्पन्न होने लगे हैं, जिसके कारण मानव जीवन का अस्तित्व खतरे में पड़ने लगा है। इसी कारण मानव जीवन की गुणवत्ता में भी ह्रास होने लगा है और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इसका अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय के रूप में उभर कर सामने आ रहा है।

जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन एक अन्तर विषयक अध्ययन है जो समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, प्रजातीय विज्ञान के साथ–साथ विज्ञान के विभिन्न विषयों से भी सम्बन्धित है। भौगोलिक अध्ययन के अन्तर्गत न केवल जीवन की गुणवत्ता का मापन किया जा सकता है अपितु उसके स्थानिक प्रारूप को विशेष रूप से प्रतिपादित किया जाता है। इसका सम्बन्ध भूगोल की अनेक शाखाओं से है। विशेषकर यह अध्ययन मानव भूगोल से सम्बन्धित है तथा इस अध्ययन का सम्बन्ध नगर से होने के कारण यह नगरीय भूगोल का भी एक अंग है। उपयुक्त शाखाओं के अतिरिक्त इसका सम्बन्ध वर्तमान में विकसित वेलफेयर भूगोल से सम्बन्धित है। जिसका उद्देश्य मानव की विभिन्न समस्याओं का अध्ययन कर उनका कल्याण करना है।

तात्पर्य यह हैं कि इस प्रकार के अध्ययन के माध्यम से किसी भी क्षेत्र प्रदेश अथवा नगर की गुणवत्ता के अध्ययन के माध्यम से उसके विकास को नई दिशा प्रदान की जा सकती है। झुंझुनूं शहर राजस्थान में एक औद्योगिक–शैक्षणिक नगरी के रूप में अपनी पहचान रखता है। शहरीकरण की प्रक्रिया में यह नगर ऊँचे पायदान पर विद्यमान है। बढ़ते शहरीकरण के फलस्वरूप उत्पन्न पर्यावरणीय संकट से नगर में विद्यमान सुविधाऐं मानव के लिए लाभकारी सिद्ध नहीं हो पा रही हैं, जिसका सीधा प्रभाव मानव जीवन की गुणवत्ता पर पड़ रहा है तथा जीवन की गुणवत्ता में ह्रास हो रहा है। इस कारण वर्तमान में झुंझुनूं शहर के अध्ययन में यह विषय अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। इसी दृष्टिकोण को आधार मानकर वर्तमान अध्ययन को गति प्रदान की गई है।

पर्यावरण प्रबंधन व नियोजन की संकल्पना :

पर्यावरण प्रबंधन की संकल्पना पर्यावरण मॉडल से सम्बंधित है जो यह सुनिश्चित करता है कि पूँजी वार्षिक कृषि निवेश तथा भूमि विकास में वृद्धि के साथ खाद्य पदार्थो की आपूर्ति में भी वृद्धि होगी परन्तु पर्यावरण प्रबंधन का प्रतिरूप इन कारकों की सीमितताओं आने वाली चुनौतियों तथा समस्याओं से निपटने के लिये नीतियों को भी सम्मिलत करता है।

आर्थिक मनुष्य के क्रिया–कलापों ने पर्यावरण एवं मानव के मध्य मधुर सम्बन्धों को विषाक्त कर दिया है। पर्यावरण प्रबंधन इस प्रकार मनुष्य के प्रकृति के साथ यथोचित समायोजन से सम्बन्धित है। इस

प्रकार पर्यावरण प्रबंधन परिस्थितिकीय संतुलन तथा स्थिरता और मनुष्य की आर्थिक या भौतिक प्रगति के मध्य एक तरह का समझौता है इसमें एक तरफ तो सामाजिक आर्थिक विकास पर ध्यान दिया जाता है तो दूसरी तरफ पर्यावरण की गुणवत्ता के परिक्षण एवं संरक्षण के लिये भरपूर प्रयास किया जाता है। अतः पर्यावरण प्रबंधन में परिरक्षात्मक एवं संरक्षात्मक दोनों उपागम अपनाये जाते हैं।

पर्यावरण प्रबंधन का महत्व 1960 एवं 1970 के दशकों में बढ़ गया क्योंकि प्राकृतिक संसाधनों के अधिकाधिक एवं अविवेकपूर्ण विदोहन तथा प्रौद्योगिकी विकास के कारण उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं ने विकसित देशों का इस ओर ध्यान आकर्षित किया परिणामस्वरूप पर्यावरण प्रबन्धन के टाप–डाऊन उपागम का अनुसरण करते हुये सरकारी अधिकारियों द्वारा पर्यावरण अवनयन एवं प्रदूषण नियंत्रण के प्रयास किये जाने लगे आगे चलकर पर्यावरण प्रबंधन एक विज्ञान के रूप में उभर कर सामने आया जिसके अन्तर्गत पर्यावरणीय समस्याओं के निदान के लिये होलिस्टिक तथा बाटम अप उपागम के आधार बनाया गया।

आरम्भिक समय में पर्यावरण का दोहन सन्तुलित मात्रा में होता था किन्तु बढ़ती जनसंख्या के साथ ही संसाधनों का अन्धाधुंध दोहन आरम्भ हुआ तथा पर्यावरण प्रबन्धन की आवश्यकता महसूस की जाने लगी संसाधनों के अति दोहन का क्रम अनवरत चलता रहा जिसमें पर्यावरणीय तत्वों का ह्रास होने लगा परिणामस्वरूप पर्यावरण के घटक अपने प्राकृतिक स्वरूप में न रहकर स्वतंत्र क्रिया में असमर्थता प्रकट करने लगे।

पर्यावरण अत्यधिक शोषण से वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व सकंट में है जिसे पर्यावरण प्रबन्धन द्वारा पुनः स्थापित किया जा सकता है। अतः स्वस्थ जीवन के लिये पर्यावरण गुणवत्ता का परिरक्षण करना आवश्यक है। पर्यावरण प्रबन्धन के अन्तर्गत पर्यावरण के उपयुक्त उपयोग करके अधिकाधिक मानवोपयोगी बनाया जाता है जिसके लिये पर्यावरण के विभिन्न घटकों का संतुलित विकास किया जाता है। इस प्रकार प्रबंधन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत नियोजन पुनरावलोकन मूल्यांकन एवं उपयुक्त निर्णय करके सीमित संसाधनों का उपयोग तथा प्राथमिकताओं में परिवर्तन आवश्यक है जिसके परिणामस्वरूप वे वास्तविक जीवन में उपयोगी हो सके।

संतुलन तथा जीवमण्डलीय पारिस्थितिकीय तंत्र अपने प्राकृतिक संतुलन तथा स्थिरता को अपने वास्तविक स्वरूप में पुनः स्थापित करने का प्रयास करता है किन्तु वर्तमान औद्योगिक एवं तकनीकी विकास परिवहन एवं संचार के साधनों में वृद्धि प्राकृतिक संसाधनों का अति दोहन तथा सम्बन्धित क्रियाओं ने इस संतुलन दशा को अव्यवस्थित किया है, जिससे पर्यावरण प्रबंधन की महत्ता को बल मिला है। पर्यावरण प्रबंधन विश्व स्तर पर प्रत्येक राष्ट्र की आवश्यकता है जिसे मनुष्य के प्रकृति के साथ यथोचित समायोजन करके संभव बनाया जा सकता है। इस प्रकार पारिस्थितिकीय संतुलन एवं स्थिरता की व्यवस्थाओं के

अनुसार प्राकृतिक संसाधनों का विवेकपूर्ण दोहन करना चाहिये। प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र के पर्यावरण के प्रबंधन में सामाजिक–आर्थिक विकास तथा पारिस्थितिकीय सिद्धान्तों को आधार माना जाता है।

पर्यावरण प्रबन्धन दीर्घ–कालिन संदर्भ में पर्यावरण के प्रति मानव केन्द्रित तथा पारिस्थतिकीय केन्द्रित दृष्टिकोणों में समन्वय स्थापित करते हुए प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण विदोहन एवं अनुकूलतम उपयोग द्वारा पोषणीय विकास, पोषणीय पर्यावरण तथा पोषणीय समाज की प्राप्ति के माध्यम से परिस्थितकीय विकास का लक्ष्य एवं प्रक्रिया है। पर्यावरण प्रबन्धन के अन्तर्गत यह सुनिश्चित किया जाता है कि संसाधनों की सतत सुलभता एवं आपूर्ति बनी रहे ताकि मानव कल्याण के अधिकतम तथा पर्यावरण की क्षति को न्यूनतम किया जा सके।

आर्थिक एवं प्रौद्योगिकीय मनुष्य के क्रियाकलापों ने पर्यावरण व मानव के बीच मधुर सम्बन्धों को सुधारने की प्रक्रिया है ताकि पर्यावरण एवं समाज दोनों की गुणवत्ता में सुधार हो सके। पर्यावरण एवं मनुष्य के मध्य स्वस्थ एवं मधुर सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना मनुष्य के विध्वंसक क्रियाकलापों पर रोक लगाकर तथा प्रकृति के परिरक्षण, संरक्षण, नियमन एवं पुनर्जनन द्वारा की जा सकती है। पर्यावरण प्रबन्धन के अन्तर्गत एक तरफ तो समाज के सामाजिक आर्थिक विकास पर ध्यान दिया जाता है तो दूसरी तरफ पर्यावरण की गुणवत्ता के परिरक्षण एवं संरक्षण के लिये भरपूर प्रयास किया जाता है।

निष्कर्ष :

नियोजन विकास की प्रक्रिया होती है। नियोजन का प्रमुख उद्देश्य समाज के सर्वागींण विकास की प्राप्ति तथा सभी प्रकार के प्राकृतिक एंव मानव संसाधनों के विदोहन एवं उपभोग द्वारा सामाजिक–आर्थिक विषमताओं को दूर करना प्रमुख है। पर्यावरण नियोजन एवं प्रबन्धन एक व्यापक विषय है जिसके अन्तर्गत मनुष्य एवं पर्यावरण के मध्य अन्तःप्रक्रियाओं तथा इनसे उत्पन्न पर्यावरणीय समस्याओं तथा उनके नियंत्रण एवं प्रबन्धन के सभी पक्षों को सम्मिलित किया जाता है। पर्यावरण नियोजन व्यक्ति या घर से प्रारम्भ होता है जो सामाजिक न्याय की प्राप्ति आर्थिक सम्पत्ति के समान वितरण तथा समान प्रादेशिक विकास का सर्वोतम साधन है। प्राकृतिक पर्यावरण में मनुष्य की आर्थिक क्रियाओं से उत्पन्न परिवर्तनों को आत्मसात करने की सीमित क्षमता होती है जब मनुष्य के आर्थिक कार्यो द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण में किये गये परिवर्तन होमियोस्टैटिक क्रियाविधि की सहनशक्ति से अधिक हो जाते है तो कई प्रकार की पर्यावरणीय समस्याएं उत्पन्न हो जाती है। इन समस्याओं का समुचित हल एवं प्रबन्धन आवश्यक होता है।

संदर्भ सूची :

– सिंह, सविन्द्र (1995) : ''पर्यावरण भूगोल'', प्रयाग पुस्तक भवन इलाहाबाद, पृष्ट–467।

– सिंह, सविन्द्र : ''पर्यावरण नियोजन तथा प्रबन्धन'', पृष्ट–470

– शर्मा, मनोज : ''पर्यावरण भूगोल'', इशिका पब्लिकेशन हाऊस जयपुर, पृष्ट–535–540

– अहलुवालिया, एस.पी. एवं बाल्स, एच.एस. (1992) – पर्यावरण शिक्षा : अवधारणाएं और रूपरेखा, शिक्षा मुद्दे और चुनौतियां, आशीष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
– अली साबिर (संपा.) (2006) – शहरी गरीबी के आयाम, रावत पब, जयपुर।
– बेल, डेविड एंड जेने, एम. (2006) – स्मॉल सिटीज, रूटलेज, न्यूयॉर्क।
– भट्ट, के.एन. (संपा.) (2008) – जनसंख्या, पर्यावरण और स्वास्थ्य, रावत प्रकाशन, जयपुर।
– बेरी, बी.जे.एल. (1973) – शहरीकरण के मानव परिणाम, मैकमिलन, लंदन।